CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

D/110

उत्तर प्रदेश

Entered 11-9-54

राजकीय संग्रहालय पुस्तकालय, विभाग D
पुस्तक क्रम संख्या 110
State Museum Library, Lucknow

की

ऐतिहासिक विभूति

श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, एम. ए.
संग्रहाध्यक्ष, पुरातत्व संग्रहालय, मथुरा

शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश
लखनऊ
१९५३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

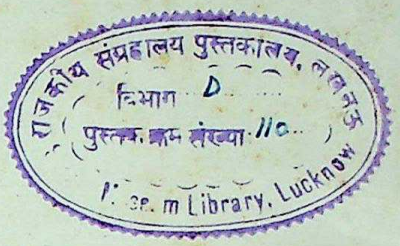

भारतीय इतिहास में

उत्तर प्रदेश का महत्त्व

उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा प्रान्त है। यह प्रदेश भारत के उत्तरी भाग में अक्षांश २३° ५२′ और ३१° १८′ उ० तथा देशान्तर ७७° ३′ और ८४° ३८′ पू० के मध्य में स्थित है। इस प्रदेश का वर्तमान क्षेत्रफल १,१३,४०९ वर्गमील है, जो ५१ जिलों में विभक्त है। १९५१ की जनगणना के अनुसार इस प्रदेश की कुल जनसंख्या ६,३२,१५,७४२ थी। इस प्रकार वर्तमान उत्तर प्रदेश क्षेत्रफल के विचार से कुल भारत का १/११ तथा जनसंख्या की दृष्टि से भारत का लगभग २/११ है। इस प्रदेश में १६ शहर ऐसे हैं जिनकी आबादी एक लाख से ऊपर है।

ऐतिहासिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश भारत का महत्त्वपूर्ण भाग है। आर्यों के भारत में आने के पहले उत्तर प्रदेश के अनेक हिस्सों में आदिवासी लोग रहते थे। ये कोल, भील, शबर, निषाद, नाग आदि नामों से प्रसिद्ध थे। अनेक आदिवासियों के वंशज तथा उनकी सभ्यता के अवशेष उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में आज भी विद्यमान हैं। आर्य लोग भारत आने पर कुछ काल तक पंचनद प्रदेश में रहे। उसके बाद पूर्व की ओर बढ़ने पर उन्होंने वर्तमान उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग को अपना आवास-स्थल बनाया। यहां की जलवायु उन्हें अनुकूल प्रतीत हुई। धीरे-धीरे इस भाग में आर्यों के निवास-स्थल हस्तिनापुर, मथुरा, अहिच्छत्रा, कांपिल्य, कान्यकुब्ज (कनौज) आदि बड़े नगरों का रूप ग्रहण करते गये और राजनीति, धर्म, दर्शन और कला के केन्द्र बने। इसके आगे पूर्व की ओर कौशांबी, प्रयाग, अयोध्या, श्रावस्ती, काशी आदि नगर भी धीरे-धीरे आर्यों के प्रधान केन्द्र बने। भारत के दो प्राचीन राजवंशों—सूर्य और चंद्र वंश—ने इसी प्रदेश में अपने शक्तिशाली राज्य स्थापित किये, जो बहुत काल तक चलते रहे। मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम ने सूर्य वंश में और लोक-नायक श्रीकृष्ण ने चंद्र वंश में जन्म लेकर इसी प्रदेश में अपनी अनेक लोकरंजिनी लीलाएं कीं। ऐतिहासिक काल में महात्मा बुद्ध तथा अनेक जैन तीर्थंकरों ने इस भूभाग को अपनी प्रधान कार्य-भूमि बनाया। मध्यकालीन संतों—कबीर, चैतन्य, वल्लभाचार्य, सूरदास, तुलसीदास आदि—ने बहुत समय तक उत्तर प्रदेश की पुण्य भूमि में निवास कर धार्मिक और साहित्यिक साधनाएं कीं। १८५७ ई० का प्रथम स्वाधीनता-संग्राम भी इसी प्रदेश से प्रारंभ हुआ।

सुविधानुसार हम उत्तर प्रदेश को पाँच भागों में बांट सकते हैं—१. उत्तर का पहाड़ी भाग, २. गंगा-यमुना के बीच का दोआब, ३. गंगा और सरयू के बीच का भाग, ४. सरयू के परली पार का प्रदेश और ५. यमुना के दक्षिण का पहाड़ी भाग, जिसमें बुन्देलखंड के जिले तथा मिर्जापुर सम्मिलित हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१. उत्तराखंड—

उत्तर के पहाड़ी भाग में, जिसे उत्तराखंड कहा जाता है, अल्मोड़ा, गढ़वाल, टेहरी-गढ़वाल, देहरादून जिले का उत्तरी भाग और नैनीताल जिले हैं। इसी भूभाग में गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषीकेश, देवप्रयाग आदि प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं। इस भूखंड में जो स्थान स्थापत्य एवं मूर्तिकला के विकास के प्रमुख केन्द्र रहे हैं वे बैजनाथ, बागेश्वर, कटारमल, जागेश्वर, द्वाराहाट, आदिबद्री, बिनसर, राणीहाट, लाखामंडल आदि हैं। इन स्थानों में प्रायः मध्यकालीन हिन्दू मन्दिर और मूर्तियां बड़ी संख्या में मिलती हैं। बैजनाथ में इन मन्दिरों की संख्या सबसे अधिक है। अल्मोड़ा जिले के कटारमल में उत्तराखंड का महत्वपूर्ण सूर्य-मन्दिर है। रानीखेत से १३ मील उत्तर द्वाराहाट में शिखर-शैली के अनेक अच्छे मन्दिर हैं। देहरादून जिले में लाखामंडल नामक स्थान यमुना के तट पर है, जहां ईस्वी पांचवीं से लेकर लगभग बारहवीं शती तक की मूर्तियां बड़ी संख्या में मिली हैं। इसी जिले के कालसी नामक स्थान में पहाड़ की एक चट्टान पर मौर्य सम्राट् अशोक के लेख खुदे हैं।

२. गंगा-यमुना का दोआब—

गंगा-यमुना के दोआब में देहरादून जिले के दक्षिणी भाग से लेकर इलाहाबाद तक १५ जिले शामिल हैं। इस दोआब का प्राचीन नाम 'अन्तर्वेदी' था। प्राचीन 'मध्यदेश' का यही भूभाग हृदयस्थल था। ब्रह्मावर्त तथा ब्रह्मर्षिदेश, जो प्राचीन साहित्य में आदर्शरूप कहे गये हैं, इसी प्रदेश में स्थित थे। मनुस्मृति के अनुसार मध्यदेश की उत्तरी सीमा हिमालय और दक्षिणी विन्ध्य पर्वत थी। पश्चिमी सीमा का निर्माण सरस्वती नदी करती थी तथा पूर्वी सीमा का गंगा-यमुना का संगम। पुराणों में मध्यदेश के अन्तर्गत पांचाल, कुरु, शूरसेन आदि जनपद बताये गये हैं। गंगा-यमुना का दोआब बहुत समय तक आर्य संस्कृति के क्रमशः प्रसार का क्षेत्र रहा। यहां हरिद्वार, हस्तिनापुर, मथुरा, कांपिल्य, संकाश्य, कनौज, कौशांबी, प्रयाग आदि नगर सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते रहे। प्राचीन चन्द्र वंश और उसकी मुख्य शाखाओं का विस्तार इसी भूभाग पर हुआ।

३. गंगा और सरयू के बीच का भाग—

गंगा और सरयू के बीच का विस्तृत भूभाग भी ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्व का है। इस भाग में प्राचीन काल में पांचाल, अयोध्या और काशी राज्य थे। अहिच्छत्रा, अयोध्या और वाराणसी क्रमशः इन राज्यों की राजधानियां थीं, जो एक दीर्घ काल तक उत्तर भारत में राजनीति, कला और संस्कृति का केन्द्र रहीं। इस भूभाग में पूरा रुहेलखंड तथा लखनऊ, फैजाबाद और बनारस कमिश्नरियों के जिले शामिल हैं।

४. सरयू का पारवर्ती प्रदेश—

चौथा भाग सरयू नदी के परली पार का प्रदेश है। इसमें बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर और देवरिया के जिले आते हैं। बौद्ध धर्म के विकास की दृष्टि से यह भाग बहुत प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन गणराज्य यहां बहुत समय तक फूलते-फलते रहे। गोंडा-बहराइच जिले की सीमा में स्थित श्रावस्ती नगरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोशल राज्य की राजधानी थी। गोरखपुर जिले में लगभग बीस मील दूर पश्चिम रुम्मिनदेई नामक स्थान है, जहां महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। वर्तमान देवरिया जिले में कसिया (प्राचीन कुशीनगर) स्थित है, जहां बुद्ध का निर्वाण हुआ था।

यमुना के दक्षिण का भाग--

उत्तर प्रदेश का पांचवां भाग यमुना नदी के दक्षिण का है। इसमें बुंदेलखंड के चार जिले—झांसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा—तथा मिर्जापुर का जिला सम्मिलित हैं। इस भाग में विंध्य पर्वत-श्रृङ्खला बिखरी है। इस प्रदेश में गुप्तकाल में तथा उसके बाद चन्देल-शासन काल में मूर्तिकला और स्थापत्य की बड़ी उन्नति हुई। देवगढ़ का प्रसिद्ध गुप्तकालीन मंदिर झांसी जिले में ही स्थित है। चंदेलों के समय में महोबा, बरवासागर, कालिंजर, मरफा, कालपी आदि में निर्मित मंदिर, किले तथा अन्य ऐतिहासिक स्थान इसी भूभाग में हैं। मिर्जापुर के जिले में सोन घाटी में तथा बांदा जिले में मानिकपुर के आसपास अनेक प्रागैतिहासिक गुफाएं मिली हैं, जिनमें प्राचीन चित्रकारी के नमूने उपलब्ध हैं। इन दोनों जिलों से पाषाण एवं ताम्रयुग के कुछ औजार भी प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान उत्तर प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक युग तक भारत का प्रमुख प्रदेश रहा है। इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का इसमें महत्वपूर्ण योग रहा है। उपजाऊ भूमि, जल की सुगमता तथा अन्य प्राकृतिक सुविधाओं के कारण उत्तर प्रदेश के अनेक भागों में लोग बड़ी संख्या में आबाद हुए। जो भाग पहाड़ों या जंगलों से आच्छादित थे उनमें आर्य सभ्यता का संचार देर से हुआ। आज भी उत्तराखंड के कुछ भागों में तथा मिर्जापुर जिले के एक भाग में अनार्य या निषाद सभ्यता के अनेक चिह्न विद्यमान हैं।

मुख्य ऐतिहासिक स्थान

उत्तर प्रदेश के मुख्य ऐतिहासिक स्थानों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है—

हस्तिनापुर—

यह स्थान मेरठ जिले की मवाना तहसील में मेरठ से २२ मील उत्तर-पूर्व है। प्राचीन काल में गंगा इस नगर के किनारे बहती थी। हाल में हस्तिनापुर के पुराने टीलों की खुदाई भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा कराई गई। इस खुदाई में विभिन्न स्तरों से प्राप्त प्राचीन मृत्पात्रों आदि से इतना पता लगाया जा सका है कि यहां की प्राचीनतम बस्ती ई० पू० १००० से पहले की रही होगी, जो कई शताब्दियों तक कायम रही। इसके बाद इस नगर में ई० १४वीं शताब्दी तक बराबर बस्तियां बसती गईं। प्राचीन काल में हस्तिनापुर में प्रसिद्ध कुरु राज्य की राजधानी थी। महाभारत काल में इसका महत्व बहुत बढ़ा। कालांतर में जब गंगा में बाढ़ के कारण यह नगर नष्ट हो गया तब कुरुवंशियों ने प्रयाग के पास कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया। उसी समय से हस्तिनापुर का महत्व कम हो गया।

मथुरा—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय इतिहास में मथुरा का प्रमुख स्थान रहा है। इसकी गणना सप्तमहापुरियों में की जाती है। यहां चंद्रवंश की यादव शाखा का अधिकार बहुत समय तक रहा। श्रीकृष्ण यादव वंश में ही उत्पन्न हुए थे। महाभारत-युद्ध में श्रीकृष्ण ने प्रधान भाग लिया। मथुरा का राज्य 'शूरसेन जनपद' के नाम से प्राचीन काल में प्रसिद्ध था। ई० पू० ४०० के लगभग शूरसेन राज्य पाटलिपुत्र साम्राज्य के अन्तर्गत हो गया और यहां क्रमशः नन्द, मौर्य, शुंग, क्षत्रप और कुषाण वंशों का शासन रहा। क्षत्रपों और कुषाणों के समय में मथुरा की बड़ी उन्नति हुई। इस काल में यहां मूर्तिकला का बड़ा विकास हुआ और विभिन्न धर्मों से संबंधित सहस्रों मूर्तियां मथुरा में बनाई गईं। यह कला लगभग १२वीं शती के अंत तक जारी रही। मथुरा में मुगल काल से पहले के कोई पूरे स्मारक नहीं बचे। अकबर और जहांगीर के समय में जो इमारतें यहां बनीं उनमें वृन्दावन का प्रसिद्ध गोविन्ददेव, मदनमोहन, गोपीनाथ तथा जुगुलकिशोर के मंदिर, गोवर्द्धन का हरदेव मंदिर और मथुरा का सती बुर्ज उल्लेखनीय हैं। मथुरा में श्रीकृष्ण के जन्मस्थान पर जहांगीर के समकालीन ओरछा-नरेश वीरसिंहदेव ने जो विशाल मंदिर बनवाया था उसे औरंगजेब ने १६६९ ई० में तुड़वाकर उस स्थान पर एक बड़ी मस्जिद बनवाई।

कनौज—

इस नगर का प्राचीन नाम 'कान्यकुब्ज' था। पुराणों में इस के सम्बन्ध में बहुत वर्णन मिलते हैं। कनौज का महत्व ईस्वी ७ वीं शती से अधिक बढ़ा, जब यहां सम्राट् हर्षवर्द्धन का प्रभुत्व स्थापित हुआ। उस समय यहां आये हुए चीनी यात्री हुएनसांग ने कनौज का विस्तार से वर्णन किया है। इसके बाद गुर्जर-प्रतीहार राजाओं के शासन-काल में कनौज में कला की बड़ी उन्नति हुई। उनके समय में शिव, विष्णु और देवी के अनेक मन्दिर बने। जो मूर्तियां कनौज में मिली हैं उनमें विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा की प्रतिमाएं अधिक हैं। इन कलाकृतियों को देखने से पता चलता है कि कनौज के कलाकार न केवल अंग-प्रत्यंगों के सुचारु प्रदर्शन में सिद्धहस्त थे अपितु वे पृष्ठभूमि-संयोजन, अलंकरण तथा भावाभिव्यक्ति के भी मर्मज्ञ थे।

भीतरगांव—

यह स्थान कानपुर जिले की घाटमपुर तहसील में कानपुर से लगभग २० मील दक्षिण है। यहां गुप्तकाल का एक महत्वपूर्ण मन्दिर मिला है। यह मन्दिर ईंट का बना हुआ है और ७० फुट ऊंचा है। इसकी दीवालों और आलों पर बड़े कलापूर्ण ढंग से उकेरी हुई मिट्टी की मूर्तियां लगी हैं। ये मूर्तियां विविध देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों आदि की हैं। वास्तव में यह मन्दिर उत्तर भारत में गुप्तकालीन वास्तु-कला का एक अनुपम उदाहरण है।

प्रयाग—

प्रयाग (वर्तमान इलाहाबाद) भारत का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। भारद्वाज मुनि का आश्रम और प्राचीन अक्षयवट यहीं था। प्रयाग बहुत समय तक कोशल राज्य के अन्तर्गत रहा। बाद में वह पाटलिपुत्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

साम्राज्य का अंग हो गया। अशोक का प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति लेख यहां के किले में रखे एक बड़े स्तम्भ पर खुदे हैं। इसी खंभे पर अशोक की रानी, बीरबल और जहांगीर के लेख भी हैं। अकबर ने अपना मजबूत किला गंगा-यमुना के संगम पर बनवाया। उसी ने इस नगर का नाम 'इलाहाबाद' या 'इलाहाबास' रक्खा। यहां ग्रांड ट्रंक रोड पर खुसरोबाग है, जो जहाँगीर के समय में बनवाया गया था। यहीं जहांगीर के लड़के खुसरो की कब्र है।

कौशांबी—

प्रयाग से लगभग ३७ मील पश्चिम-दक्षिण यमुना के उत्तरी तट पर कोसम नामक एक छोटा गांव है। यहीं भारत की प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी कौशांबी बसी हुई थी। कौशांबी जिस राज्य की राजधानी थी उसका नाम 'वत्स देश' था। महात्मा बुद्ध के समय में यहां का राजा उदयन था। उदयन और अवन्ती की राजकुमारी वासवदत्ता की प्रेम-कथा भारतीय साहित्य की एक अमर गाथा है। बुद्ध कई बार कौशांबी आये। उनके लिए यहां 'कुक्कुटाराम' तथा 'घोषिताराम' नामक दो विहारों का निर्माण कराया गया। पिछले विहार के अवशेष हाल में की गई कौशांबी की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। यह खुदाई प्रादेशिक सरकार की सहायता से प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा कराई गई है। इसमें कुषाण और गुप्तकालीन अनेक महत्वपूर्ण शिलालेख, मूर्तियां मिट्टी के फलक, मनके, सिक्के आदि प्राप्त हुए हैं, जिनसे कौशांबी के इतिहास पर बड़ा प्रकाश पड़ा है। ये वस्तुएं प्रयाग विश्वविद्यालय के कौशांबी कक्ष में संगृहीत हैं। कौशांबी से इस खुदाई के पहले की प्राप्त अधिकांश सामग्री प्रयाग के म्यूनिसिपल संग्रहालय में प्रदर्शित है।

अहिच्छत्रा—

इस नगर के अवशेष वर्तमान बरेली जिले में आंवला स्टेशन से लगभग १० मील उत्तर रामनगर नामक गांव के समीप टीलों के रूप में बिखरे पड़े हैं। यह नगरी पांचाल राज्य की राजधानी थी। महाभारत-युद्ध के समय द्रुपद पांचाल के राजा थे। जब उन्होंने अपने ब्राह्मण मित्र द्रोणाचार्य का अपमान किया तब द्रोण ने इसका बदला अपने शिष्यों की सहायता से लिया। उन्होंने द्रुपद को हराकर पांचाल का उत्तरी भाग अपने अधिकार में कर लिया और द्रुपद के पास केवल दक्षिण का भाग रहने दिया। दक्षिण वाले भाग की राजधानी कांपिल्य (वर्तमान कंपिल) हुई। ऐतिहासिक काल में भी अहिच्छत्रा का स्थान बहुत महत्वपूर्ण रहा। शुंगकाल में यहां मित्रवंशी राजाओं का शासन हुआ। इनमें अग्निमित्र, इन्द्रमित्र, भानुमित्र, भूमिमित्र, अच्युत आदि राजाओं के सिक्के बड़ी संख्या में यहां से मिले हैं। अहिच्छत्रा में पुरातत्व विभाग द्वारा हाल में जो खुदाई की गई उसमें पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों, सिक्कों आदि के रूप में मूल्यवान् सामग्री प्राप्त हुई है। मिट्टी की गुप्तकालीन कुछ मूर्तियां तो अत्यन्त सुन्दर हैं। इनमें पार्वती का आकर्षक केशविन्यास युक्त मस्तक, शिव का सिर, किन्नरमिथुन आदि मूर्तियां उल्लेखनीय हैं। हाल में यहां से एक यक्ष-प्रतिमा भी मिली है। इसमें ई० दूसरी शती का एक लेख है, जिसके अनुसार यह मूर्ति 'फरगुल' नामक विहार में स्थापित की गई थी।

अयोध्या—

इस नगरी को भगवान् श्रीराम का जन्मस्थान होने का गौरव प्राप्त है। भारत में प्रसिद्ध इक्ष्वाकु वंशी राजाओं की यह नगरी बहुत समय तक राजधानी रही। ऐतिहासिक काल में भी अयोध्या की प्रसिद्धि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनी रही। शुंग-काल के पुरावशेष भी यहां मिले हैं। गुप्त-काल में अयोध्या एक महत्वपूर्ण शिक्षा-केन्द्र था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में अयोध्या साहित्य और कला का केन्द्र बनी। वर्तमान अयोध्या में भगवान् राम के तथाकथित जन्म-स्थान पर बाबरी मस्जिद विद्यमान है। इसमें लगे हुए अनेक खंभे आदि किसी पुरानी हिन्दू इमारत के प्रतीत होते हैं। अयोध्या में अन्य अनेक स्थान श्रीराम, सीता, दशरथ आदि से सम्बन्धित बताये जाते हैं। अयोध्या के समीप ही फैजाबाद में अवध के नवाबी काल की कई इमारतें हैं।

बनारस—

बनारस भारत के ही नहीं, संसार के प्राचीनतम नगरों में से है। इसके प्राचीन नाम 'वाराणसी' और 'काशी' मिलते हैं। महात्मा बुद्ध से पहले का काशी का इतिहास पौराणिक अनुश्रुतियों पर आधारित है। बुद्ध के समय में बनारस उद्योग-धन्धों तथा व्यापार का बड़ा केन्द्र था। कुषाणों तथा गुप्तों के शासनकाल में काशी की उन्नति हुई। अकबर के समय में यहां अनेक मन्दिर, घाट और कुण्ड बनवाये गये। राजा टोडरमल ने विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर बनवाया, जो कि पुराने विश्वनाथ के स्थान पर निर्मित बताया जाता है। इसे औरंगजेब ने अन्य मंदिरों के साथ तुड़वा डाला और वहीं ज्ञानवापी की मस्जिद बनवाई। मराठों के काल में काशी में अनेक मन्दिरों तथा घाटों के निर्माण और मरम्मत का काम हुआ। वर्तमान समय में विश्वनाथ, दुर्गामंदिर, आदिविश्वेश्वर, संकटमोचन आदि मंदिर दर्शनीय हैं। यहां घाटों और कुण्डों की संख्या बहुत बड़ी है। इनमें दशाश्वमेध, मणिकर्णिका, लोलार्क तथा दुर्गाकुण्ड मुख्य हैं। काशी स्टेशन के समीप राजघाट में कुछ साल पहले खुदाई में शुंगकाल से लेकर मध्यकाल तक के अवशेषों की एक बड़ी राशि प्राप्त हुई थी। इसमें गुप्तकाल की सैकड़ों मिट्टी की मूर्तियां और मुहरें विशेष उल्लेखनीय हैं। इस समय काशी के मुख्य ऐतिहासिक स्थान कर्दमेश्वर का शिव-मंदिर, लालखां का मकबरा, माधवराव का धरहरा और ढाई कंगूरे की मस्जिद प्रसिद्ध हैं। काशी को अनेक महात्माओं एवं प्रसिद्ध साहित्यकारों की जन्मभूमि और कर्मभूमि होने का भी गौरव प्राप्त है। कबीर, तुलसीदास, भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द आदि विभूतियों ने यहीं अपने जीवन का एक बड़ा भाग व्यतीत किया।

सारनाथ—

सारनाथ काशी से लगभग ५ मील उत्तर है। इसके पुराने नाम 'ऋषिपत्तन' और 'मृगदाव' थे। ज्ञान-प्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध ने सबसे पहले यहीं अपना धर्मोपदेश किया, जो 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के नाम से प्रसिद्ध है। अपने जीवन में बुद्ध यहां बराबर आकर निवास करते रहे। उनकी मृत्यु के बाद सारनाथ बौद्धों के लिए एक महान तीर्थ बन गया। ई० पू० तीसरी शती में अशोक ने यहां एक बड़ा स्तूप बनवाया और उसके समीप ही एक कलापूर्ण शीर्ष सहित अभिलिखित स्तम्भ भी लगवाया, जो अब भी भग्नावस्था में वहां मौजूद है। अशोक के बाद सारनाथ में स्तूप, मन्दिर और विहार बनवाने की परम्परा जारी रही। इनमें से चौखंडी, धमेख और धर्मराजिका स्तूप के अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं। पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई में अनेक प्राचीन विहारों और मंदिरों के खण्डहर निकले हैं। कला की जो विविध वस्तुएं निकलीं वे स्थानीय संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। इनमें अशोककालीन प्रसिद्ध सिंह-शीर्ष, बुद्ध और बोधिसत्व की अनेक मूर्तियां तथा जातक-कथाओं आदि से चित्रित विविध शिलापट्ट उल्लेखनीय हैं।

श्रावस्ती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन श्रावस्ती नगरी के खंडहर गोंडा-बहराइच ज़िलों की सीमा पर 'सहेत-महेत' नाम से बड़े विस्तार में बिखरे पड़े हैं। यह स्थान उत्तर-पूर्वी रेलवे के बलरामपुर स्टेशन से लगभग १० मील दूर स्थित है। श्रीराम ने अपने पुत्र लव को श्रावस्ती का अधिकारी बनाया था। कोशल राज्य के जो दो भाग हुए उनमें उत्तर कोशल की राजधानी श्रावस्ती हुई। बौद्ध और जैन साहित्य में इस नगरी के बहुत वर्णन मिलते हैं। महात्मा बुद्ध को यह नगरी अत्यन्त प्रिय थी। वे यहां बहुत समय तक रहे। श्रावस्ती के समृद्ध सेठ अनाथपिंडक ने बुद्ध के लिए 'जेतवन विहार' का निर्माण कराया। इस विहार के और यहां समय-समय पर बनी इमारतों के कुछ अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं। श्रावस्ती जैन धर्म का भी महत्वपूर्ण केन्द्र थी। तीर्थंकर संभवनाथ जी तथा चन्द्रप्रभु स्वामी के जन्म यहीं हुए थे। श्रावस्ती की खुदाई में प्राप्त अधिकांश वस्तुएं लखनऊ के संग्रहालय में हैं।

कसिया—

इस स्थान का प्राचीन नाम 'कुशीनगर' था। यह देवरिया ज़िले में देवरिया से लगभग १६ मील उत्तर में स्थित है। बौद्धधर्म के मुख्य स्थानों में इसकी गणना है। यहीं महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। कसिया में भगवान बुद्ध की लेटी हुई एक विशाल प्रतिमा है। पास में ही बड़ा निर्वाण स्तूप तथा पुराने विहारों और मंदिरों के भग्नावशेष हैं। कुछ दूर साढ़े दस फुट ऊंची बुद्ध की एक मध्यकालीन मूर्ति है, जो काले पाषाण की बनी है।

देवगढ़—

यह स्थान झांसी जिले की ललितपुर तहसील में ललितपुर से सड़क के रास्ते लगभग २३ मील पश्चिम में स्थित है। गुप्तकाल में यहां एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मंदिर की रचना हुई। यह मंदिर पत्थर का बना है और 'दशावतार' के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर गुप्तकालीन शिलापट्ट बड़े कलापूर्ण ढंग से उकेर कर लगाये गये हैं। इनमें नरनारायण, गजेन्द्रमोक्ष, शेषशायी विष्णु आदि के दृश्य बड़े ही सुन्दर हैं। रामायण और कृष्णलीला सम्बन्धी दृश्य भी यहां बड़ी संख्या में उपलब्ध हुए हैं। देवगढ़ गांव के समीप ऊंची पहाड़ी पर अनेक जैन तथा हिन्दू मन्दिर वर्तमान हैं। इनका निर्माण ७ वीं और १२ वीं शती के बीच में हुआ था।

बरवासागर—

यह स्थान झांसी जिले में झांसी से बारह मील दक्षिण-पूर्व मानिकपुर रेलवे लाइन पर है। यहां एक रमणीक तालाब और उसके तट पर ओरछा के राजा का बनवाया हुआ किला है। यहाँ चन्देल राजाओं के द्वारा १०वीं-११वीं शती में बनवाई हुई अनेक इमारतें हैं। इनमें शिव का मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। इसे यहाँ 'जराय का मठ' कहते हैं। मंदिर शिखर-शैली का है और इसकी बाहरी दीवालों पर विविध देवी-देवताओं की अनेक मूर्तियां, बेल-बूटे आदि उत्कीर्ण हैं। उत्तर प्रदेश में चन्देल वास्तुकला का यह मंदिर एक उत्तम उदाहरण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झांसी

झांसी नगर प्रातःस्मरणीया रानी लक्ष्मीबाई से सम्बन्धित होने के कारण भारतीय इतिहास में अमर होगया है। झांसी का किला अब भी स्वातंत्र्य-युद्ध के उस काल की याद दिलाता है। रानी लक्ष्मीबाई का निवास-स्थान भी किले के पास है; उसमें आजकल कोतवाली है। झांसी में अन्य मुख्य ऐतिहासिक स्थान गंगाधर राव और रामचन्द्र राव की समाधियां, मेहदी बाग, लक्ष्मीताल और लक्ष्मी मंदिर हैं।

कालपी—

जालौन जिले में पुण्यतोया यमुना के कूल पर बसी हुई कालपी नगरी अतीत की कितनी ही गाथायें सँजोये हुए है। यहीं व्यास-क्षेत्र है, जहां वेदव्यास ने अपने अमर ग्रन्थों की रचना की। व्यास क्षेत्र के उचित संरक्षण की ओर उत्तर प्रदेश सरकार आवश्यक कार्यवाही कर रही है। चन्देलों के समय में कालपी की बड़ी उन्नति हुई और यह व्यापारिक यातायात का केन्द्र बनी। वर्तमान समय में कालपी की ऐतिहासिक इमारतों आदि में यहां का किला, बीरबल का रंगमहल, प्रभावती मंडी, मुगल टकसाल, चौरासी गुंबद और गोपाल मंदिर उल्लेखनीय हैं। किले और गोपाल मंदिर में लक्ष्मीबाई, तात्याटोपी आदि स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानी ठहरे थे।

महोबा—

हमीरपुर जिले का महोबा मुख्य नगर है और झांसी-मानिकपुर रेलवे लाइन पर स्थित है। वीर चन्देलों का यह प्रधान गढ़ था। आल्हा-ऊदल की ओजपूर्ण गाथाओं से आज भी यहां का वायुमंडल गुंजरित है। महोबा में स्थापत्य और मूर्तिकला बहुत समय तक फूली-फली। चन्देलों के समय में यहां हिन्दू, बौद्ध और जैन मंदिर बने। लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित सिंहनाद अवलोकितेश्वर की मूर्ति यहीं मिली थी। यह प्रतिमा मध्यकालीन मूर्तिकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। चन्देलों के समय में महोबा में अनेक बड़े सरोवर बने। इनमें कीरत सागर, मदन सागर, विजय सागर आदि यहां अब भी देखे जा सकते हैं।

कालिंजर—

उत्तर प्रदेश में कालिंजर सबसे बड़ा पहाड़ी दुर्ग है। यह बांदा जिले में बांदा से लगभग ३३ मील दक्षिण-पूर्व नरैनी तहसील में स्थित है। यह दुर्ग विंध्य की एक ८०० फुट ऊंची पहाड़ी पर बना है। किले की लम्बाई लगभग एक मील और चौड़ाई आधा मील है। दुर्ग के ऊपर पहुँचने तक ७ फाटक पार करने पड़ते हैं। चन्देलों के समय में कालिंजर उनका प्रधान गढ़ हुआ। उस समय इसकी गणना भारत के अभेद्य दुर्गों में की जाती थी। तत्कालीन और परवर्ती शिलालेख तथा हिन्दू धर्म-संबंधी मूर्तियां बड़ी संख्या में यहाँ मिली हैं। कई शिलालेख ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्व के हैं। कालिंजर में नीलकंठ महादेव की एक विशाल प्रतिमा है, जो पहाड़ की चट्टान काटकर बनाई गई है। इसके अतिरिक्त कोटि तीर्थ, पाताल गंगा, सीताकुण्ड आदि अनेक धार्मिक स्थान कालिंजर में हैं। इनके उल्लेख पौराणिक साहित्य में भी मिलते हैं। कालिंजर से शैवधर्म संबंधी अनेक प्रतिमायें मिली हैं, जिनमें कई कलापूर्ण चतुर्मुख शिवलिंग भी हैं।

आगरा—

मुगल स्थापत्य के लिए आगरा और उससे २४ मील दूर फतेहपुर सीकरी बहुत प्रसिद्ध हैं। अकबर ने आगरा का विशाल किला बनवाया और नई राजधानी सीकरी में अनेक महलों आदि का निर्माण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कराया। आगरे का किला त्रिभुजाकार है। इसकी दीवालें लगभग ७० फुट ऊंची हैं। किले के भीतर मोती मस्जिद, मीना बाज़ार, दीवाने आम, दीवाने खास, नगीना मस्जिद, मच्छी भवन, शीशमहल, जहांगीर और शाहजहां के महल आदि हैं। आगरे का ताजमहल संसार के महान् आश्चर्यों में गिना जाता है। इसका निर्माण १६३१ और १६५३ ई० के बीच में हुआ और इसमें देशी तथा विदेशी बड़े कुशल कारीगर लगाये गये। प्रभूत धनराशि द्वारा इस स्मारक का निर्माण कराया गया। यमुना के सुरम्य तट एवं ताज के चारों ओर हरे-भरे उद्यान से इस स्मारक का सौंदर्य बहुत बढ़ गया है। आगरा की अन्य उल्लेखनीय इमारतें इतमादुद्दौला का मक़बरा, चीनी का रौज़ा, मोतीबाग, काला गुंबद, जामा मस्जिद, महताब बाग, हुमायूँ की मस्जिद आदि हैं।

फतेहपुर सीकरी--

सीकरी को एक सुन्दर नगर बनाने का श्रेय अकबर को है। यहां जामा मस्जिद, शेख सलीम चिस्ती की दरगाह, जोधाबाई का महल, बुलन्द दरवाजा, तुर्की सुलताना का महल, दीवाने खास, बीरबल का मकान आदि महत्वपूर्ण इमारतें हैं। इनमें हिन्दू और ईरानी वास्तुकला का सराहनीय समन्वय मिलता है। जामा मस्जिद अपने ढंग की अनोखी इमारत है। इसका अलंकृत पूजागृह, विशाल प्रांगण तथा प्रवेशद्वार दर्शनीय हैं। शेख सलीम चिस्ती की दरगाह स्वच्छ संगमरमर की बनी है। इसकी निर्माण-कला उत्कृष्ट कोटि की है। बुलन्द दरवाजे की उंचाई १३४ फुट है। यह दर्वाजा भारत के अत्यन्त ऊंचे द्वारों में से है। सीकरी की प्रायः सभी इमारतों में स्थायित्व, सौंदर्य, संतुलन आदि विशेषताओं का ध्यान रक्खा गया है।

जौनपुर--

जौनपुर नगर फ़िरोज़शाह तुग़लक के समय में १३५६ ई० में आबाद हुआ। १३६४ से यहां शर्की वंश के शासनकाल में जौनपुर में अनेक कलापूर्ण इमारतों का निर्माण हुआ। इन इमारतों में इब्राहीम नायब की मस्जिद और किला, अटाला मस्जिद, लाल दरवाजा मस्जिद तथा जामा मस्जिद विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें अटाला मस्जिद बहुत विशाल है और शर्की स्थापत्य का एक सुन्दर नमूना है। इसमें और लाल दरवाजा मस्जिद में हिन्दू अलंकरणों का भरपूर प्रयोग किया गया है। हुसेन शाह के द्वारा निर्मित जामा मस्जिद अपने भव्य लीवान के लिए मशहूर है।

लखनऊ--

लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी है। गोमती नदी के तट पर बसा हुआ यह नगर अपने सुन्दर उद्यानों और नवाबों की बनवाई हुई आलीशान इमारतों के लिए प्रख्यात है। अनुश्रुति के अनुसार लखनऊ प्रारम्भ में श्रीराम के भाई लक्ष्मण द्वारा बसाया गया था और इसका नाम 'लक्ष्मणपुर' था। यहां एक पुराना टीला 'लक्ष्मणटीला' के नाम से अब भी प्रसिद्ध है। मुसलमानी शासनकाल में लखनऊ नगर की बढ़ती हुई। अकबर, जहांगीर और शाहजहां के समय में यहां कई इमारतों का निर्माण हुआ। परन्तु लखनऊ की सबसे अधिक उन्नति अवध के नवाबों के समय में हुई। नवाबों में आसफुद्दौला, गाजीउद्दीन हैदर, सआदतअली खां, मुहम्मदअली शाह और वाजिदअली शाह अधिक प्रसिद्ध हैं। आसफुद्दौला (१७७५-९७ ई० ने लखनऊ का बड़ा इमामबाड़ा बनवाया। इसके पास के विशाल रूमी दरवाजा और आसफी मस्जिद का तथा दौलतखाना, रेजीडेन्सी, बीबियापुर कोठी, चौक बाजार आदि का भी निर्माण इसके द्वारा किया गया। कहते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हैं कि इस नवाब ने भयंकर अकाल से पीड़ित लोगों को काम दिलाने की वजह से कई बड़ी इमारतों का निर्माण कराया। इसके संबंध में यह कहावत प्रसिद्ध है—

जिसे न दे मौला।
उसे दे आसफुद्दौला॥

आसफुद्दौला के बाद सआदतअली खां के समय (१७९८-१८१४ ई०) में दिलकुशा महल, बेलीगारद दरवाजा और लाल बारादरी का निर्माण हुआ। इसी बारादरी में आजकल राजकीय संग्रहालय है। गाजीउद्दीन हैदर (१८१४-२७ ई०) ने शाहनजफ, मोतीमहल, मुबारक मंजिल तथा सआदतअली खां और खुर्शीदजादी के विशाल मकबरे बनवाये। उसने नगर के दक्षिण ओर एक नहर भी खुदवाई, जो 'हैदर कैनाल' कहलाती है। नसीरुद्दीन हैदर ने गोमती तट पर छतरमंजिल का निर्माण कराया। उसके बाद मुहम्मदअली शाह के समय (१८३८-४२ ई०) में हुसेनाबाद का इमामबाड़ा, बड़ी जामा मस्जिद और हुसेनाबाद बारादरी आदि इमारतें बनवाई गईं। वाजिदअली शाह (१८४८-५६ ई०) अंतिम नवाब था। इसे चित्रकला और संगीत से प्रेम था। इसके द्वारा बनवाये हुए कैसरबाग में संगीत की लहरी बराबर गूँजती रहती थी। १८५६ ई० में अंग्रेजों ने वाजिदअली को तख्त से उतार कर अवध पर कब्जा कर लिया। १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम में लखनऊ ने उल्लेखनीय भाग लिया।

उत्तर प्रदेश के मुख्य संग्रहालय

पुरातत्व और इतिहास की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का स्थान भारत में अग्रगण्य है। इस प्रदेश में प्राचीन स्मारकों, टीलों तथा अवशेषों की संख्या बहुत बड़ी है। इतिहास और कला की जो पुरानी वस्तुएं इन प्राचीन स्थानों से मिली हैं वे प्रदेश के कई संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। मुख्य सार्वजनिक संग्रहालयों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

राजकीय संग्रहालय, लखनऊ—

उत्तर प्रदेश का यह सबसे पुराना संग्रहालय है। इसकी स्थापना १८६३ ई० में हुई थी। इसके चार मुख्य विभाग हैं—पुरातत्व, कला, नृतत्वशास्त्र तथा प्राणिशास्त्र विभाग। पुरातत्व विभाग में मथुरा के ककाली तथा अन्य टीलों से प्राप्त प्राचीन जैन और बौद्ध मूर्तियों के रूप में विशाल सामग्री है। इन मूर्तियों का समय लगभग ई० पू० २०० से ११०० ई० तक है। प्रदेश के अन्य भागों से प्राप्त बौद्ध, जैन तथा हिन्दू मूर्तियां यहां प्रदर्शित हैं। मिट्टी की मूर्तियां, सांचे और मुहरें श्रावस्ती, मथुरा, राजघाट, अहिच्छत्रा, संकिसा, भीतरगांव आदि से प्राप्त की गई हैं। संग्रहालय में पुराने शिलालेखों, ताम्रपत्रों, कांसे की मूर्तियों, प्रागैतिहासिक अवशेषों तथा पुराने हथियारों का अच्छा संग्रह है। आहत मुद्राओं (पंचमार्क्ड) से लेकर अवध के नवाबों तक के समय के सिक्कों का बहुमूल्य भंडार इस संग्रहालय में है। चित्र-विभाग में हिन्द-ईरानी, राजपूत, पहाड़ी तथा दक्षिणी शैली के अनेक चित्र संगृहीत हैं। अवध के नवाबी काल की भी एक चित्र-वीथिका है। हाल में उत्तराखंड से कुछ तिब्बती चित्रपट तथा अन्य दुर्लभ वस्तुएं भी प्राप्त हुई हैं। मिश्र की एक ममी भी हाल में यहां लाई गई है।

पुरातत्व संग्रहालय, मथुरा—

इस संग्रहालय की स्थापना १८७४ ई० में हुई थी। इसमें पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों, शिलालेखों, इमारती पत्थरों आदि की महत्वपूर्ण सामग्री संचित है। कुषाणकाल के अवशेषों की संख्या सबसे अधिक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

हैं। इनमें बौद्ध, हिन्दू और जैन प्रतिमायें सम्मिलित हैं। गुप्त काल में यहां बुद्ध की अनेक कलापूर्ण मूर्तियों की रचना हुई। इस संग्रहालय में यक्षों, नागों तथा कुषाण सम्राटों की भी मूर्तियां प्रदर्शित हैं, जो ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्व की हैं। ये मूर्तियां अधिकांश में मथुरा नगर और उसके आसपास से मिली हैं और लाल बलुए पत्थर की बनी हुई हैं। प्राक् मौर्य काल से लेकर गुप्त काल तक की मृण्मूर्तियों का भी यहां अच्छा संग्रह है। कुछ कांसे की प्रतिमायें तथा विविध कालों के सिक्के भी इस संग्रहालय में संचित हैं।

सारनाथ संग्रहालय--

सारनाथ का प्रसिद्ध पुरातत्व संग्रहालय १९०४ ई०में स्थापित हुआ था। यह स्थानीय संग्रहालय है और इसमें यहाँ की खुदाई से प्राप्त मूर्तियां आदि संगृहीत हैं। इनका समय ई० पू० तीसरी शती से लेकर १२वीं शती तक है। इनमें गुप्तकालीन मूर्तियों की संख्या अधिक है। धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठे हुए भगवान् बुद्ध की मूर्ति तथा सिंहांकित स्तंभ-शीर्ष कला की महान् कृतियां हैं। बोधिसत्व और बुद्ध की अनेक प्रतिमाएं, इमारती पत्थर तथा कुछ मिट्टी की मूर्तियां, मुहरें और ईंटें भी इस संग्रहालय में हैं।

भारत कला भवन—

भारतीय ललित कलाओं के संग्रह-रूप में कला भवन का आरंभ १९२० ई० में हुआ था। इस समय यह बनारस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत है। इसमें मुगल और कांगड़ा चित्रों का बहुमूल्य संग्रह सुरक्षित है। मुगल चित्रों के लिए यह संग्रहालय भारत में बेजोड़ है। चुने हुए प्राचीन सिक्कों, मिट्टी की मूर्तियों और मनकों का भी यहां अच्छा संग्रह है। राजघाट की खुदाई से प्राप्त कलापूर्ण मिट्टी की मूर्तियां तथा पाषाण-प्रतिमायें भी इस संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

म्यूनिसिपल संग्रहालय, इलाहाबाद—

इलाहाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड के अन्तर्गत इस संग्रहालय की स्थापना १९३१ ई० में हुई। कौशाम्बी से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों और मनकों का यहां अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त भारहुत, नागौद, खजुराहो आदि विन्ध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त गुप्त एवं मध्यकालीन मूर्तियों का यहां बहुत बड़ा संग्रह है। मुगल और राजपूत चित्रों तथा कुछ आधुनिक चित्रों का भी यहां संकलन है। हस्तलिखित ग्रन्थ-विभाग में हाथ के लिखे हुए लगभग १७ हजार ग्रन्थ हैं। 'जवाहरलाल नेहरू विभाग' में श्री नेहरू को समय-समय पर भेंट में दी गई वस्तुएं संगृहीत हैं।

उत्तराखंड के अनेक पुरातत्वीय अवशेष गुरुकुल कांगड़ी के संग्रहालय में संगृहीत हैं। हाल में कालपी में हिंदी भवन में एक संग्रहालय की स्थापना हुई है। ऊपर के संग्रहालयों में लखनऊ और मथुरा के संग्रहालय उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा संचालित हैं। सारनाथ का संग्रहालय भारत सरकार के अधीन है। हाल में प्रादेशिक सरकार ने संग्रहालयों की दशा सुधारने तथा प्रदेश के अन्य उपयुक्त स्थानों में संग्रहालय स्थापित करने के लिए एक संगठन समिति का निर्माण किया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट दे दी है और उस पर शासन द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। शिक्षा विभाग की ओर से विभिन्न जिलों में शिक्षण-संग्रहालय भी स्थापित किये गये हैं, जिन का उद्देश्य विद्यार्थियों को वस्तुओं के प्रत्यक्ष दर्शन द्वारा पाठ्य विषयों का समुचित ज्ञान कराना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश में पुरातत्व सम्बन्धी कार्य

इस प्रदेश में पुरातत्व विषयक खोज का काम कनिंघम के द्वारा १८६२ ई० में प्रारम्भ किया गया। उन्होंने अपने सहायकों के साथ लगभग २० वर्ष तक प्रदेश के विभिन्न प्राचीन स्थलों का भ्रमण किया और उनके विषय में रिपोर्टें तैयार कीं। प्राचीन मूर्तियों, सिक्कों आदि के रूप में कनिंघम को जो सामग्री मिली उसे उन्होंने विभिन्न संग्रहालयों में रक्खा। खुदाई का काम बहुत दिन तक इस प्रदेश में नहीं किया जा सका। लार्ड कर्ज़न के समय में पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष जान मार्शल के द्वारा व्यवस्थित खुदाई का कार्य हाथ में लिया गया। उत्तर प्रदेश में भीटा (जि० इलाहाबाद) श्रावस्ती, कसिया, मथुरा, सारनाथ, राजघाट और कौशांबी में खुदाई कराई गई। हाल में अहिच्छत्रा, हस्तिनापुर तथा बहादराबाद (हरिद्वार के पास) में भी खुदाई हुई है। इन स्थानों से प्राचीन अवशेष बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं और उनके द्वारा भारतीय इतिहास के अनेक अंगों पर बड़ा प्रकाश पड़ा है। खुदाई के साथ पुराने स्मारकों के संरक्षण का भी काम हुआ। सहेत-महेत, सारनाथ, कसिया, भीतरगांव, कालिंजर, ताजमहल, और फ़तेहपुर सीकरी की इमारतों की मरम्मत समय-समय पर होती रही। भारत सरकार के द्वारा इन स्थानों के सम्बन्ध में विविध विवरण विभागीय वार्षिक रिपोर्टों में प्रकाशित कराये गये।

उत्तर प्रदेश शासन का योग

नये भारतीय संविधान के अनुसार पुरातत्व का विषय अंशतः प्रादेशिक शासनों के अधिकार में आ गया है। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही के लिए १९५१ में एक पुरातत्व अधिकारी की नियुक्ति की, जिसने प्रदेश के प्राचीन स्मारकों आदि के अपेक्षित विवरण तथा सूचियां तैयार कीं। एक सूची में वे स्मारक आदि हैं जो कि राष्ट्रीय महत्व के हैं तथा दूसरी के अन्तर्गत अन्य। ऐसे पुराने स्थलों की भी सूची बना ली गई है जिनकी देखभाल और खुदाई का काम भारत सरकार तथा प्रादेशिक सरकार सम्मिलित रूप में करेंगी। अरक्षित स्मारकों, टीलों आदि में लच्छागिरि, महाविद्या, पारसनाथ, सोहसा आदि अनेक स्थानों में संरक्षण का कार्य प्रादेशिक सरकार द्वारा कराया जा चुका है। इसके अतिरिक्त ऐसी इमारतों और स्थानों की ओर भी उत्तर प्रदेशीय शासन का ध्यान गया है जो कि प्राचीन महापुरुषों और विभूतियों से सम्बन्धित रहे हैं। इनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं—सुल्तानपुर जिले में रामनगर में मलिक मुहम्मद जायसी की समाधि की मरम्मत; मथुरा जिले में परासौली में महाकवि सूरदास के निधन-स्थान पर तथा महाकवि तुलसीदास के राजापुर (जि० बांदा) में स्थित जन्म-स्थान पर उपयुक्त स्मारकों के निर्माण का काम और कालपी के व्यास-क्षेत्र के संरक्षण का काम। इन तथा अन्य कतिपय स्थानों में प्रारम्भिक कार्य पूरा किया जा चुका है और शेष के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

कौशांबी की खुदाई के लिए प्रादेशिक शासन द्वारा प्रयाग विश्वविद्यालय को कई वर्षों से आवश्यक अनुदान दिया जा रहा है। पुरातत्व की उन्नति के लिए कई अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं तथा संग्रहालयों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। प्राचीन संस्कृति और पुरातत्व में जनसाधारण की रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से प्रादेशिक सरकार ने उत्तर प्रदेश के मुख्य ऐतिहासिक स्थानों के सम्बन्ध में सचित्र पुस्तिकाएं प्रकाशित करने की योजना बनाई है। इनमें से कई पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं और शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

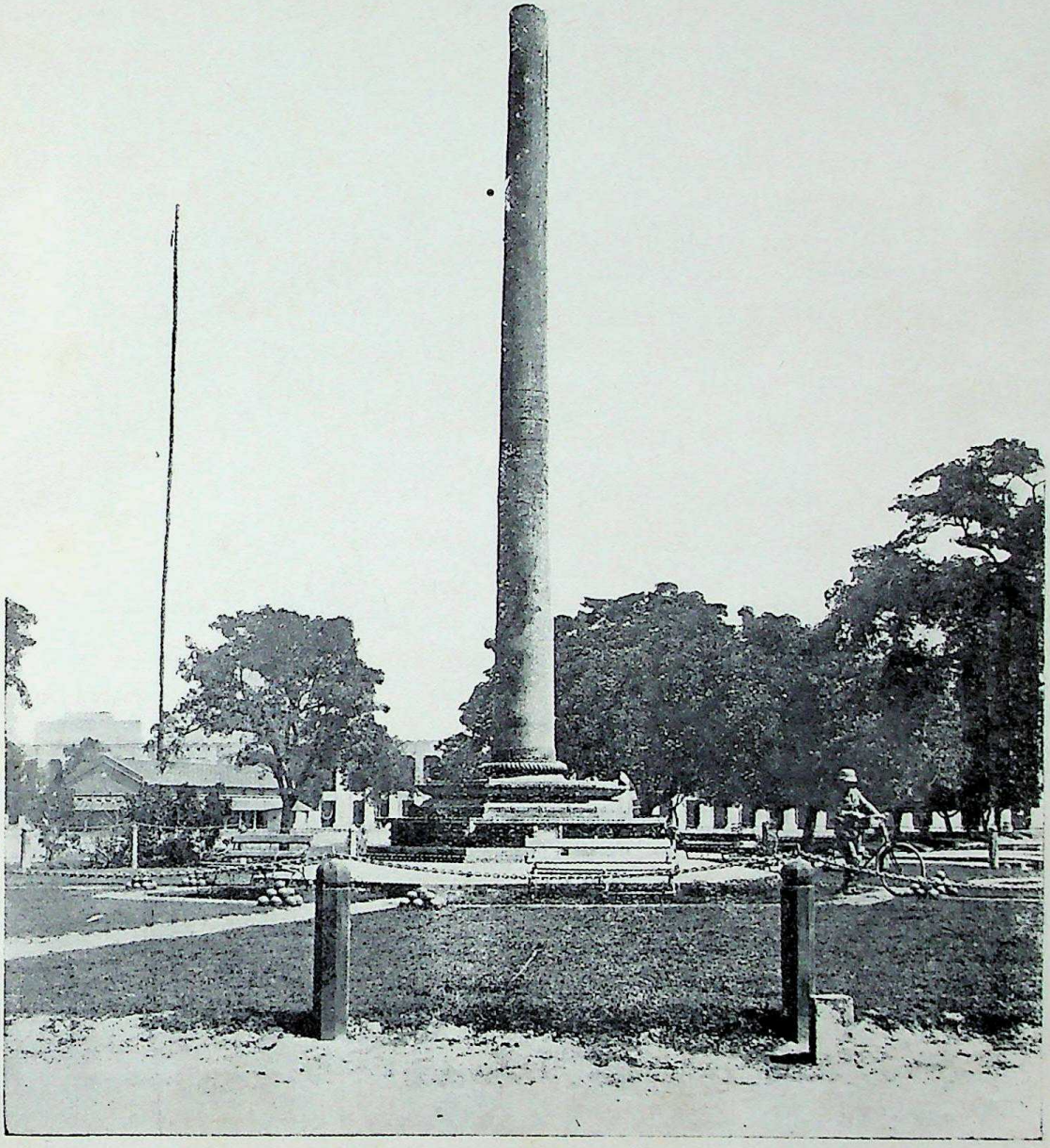

प्रयाग के किले में स्थित ३५ फुट ऊंचा प्रसिद्ध स्तंभ, जिस पर अशोक और समुद्रगुप्त के ऐतिहासिक लेख खुदे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

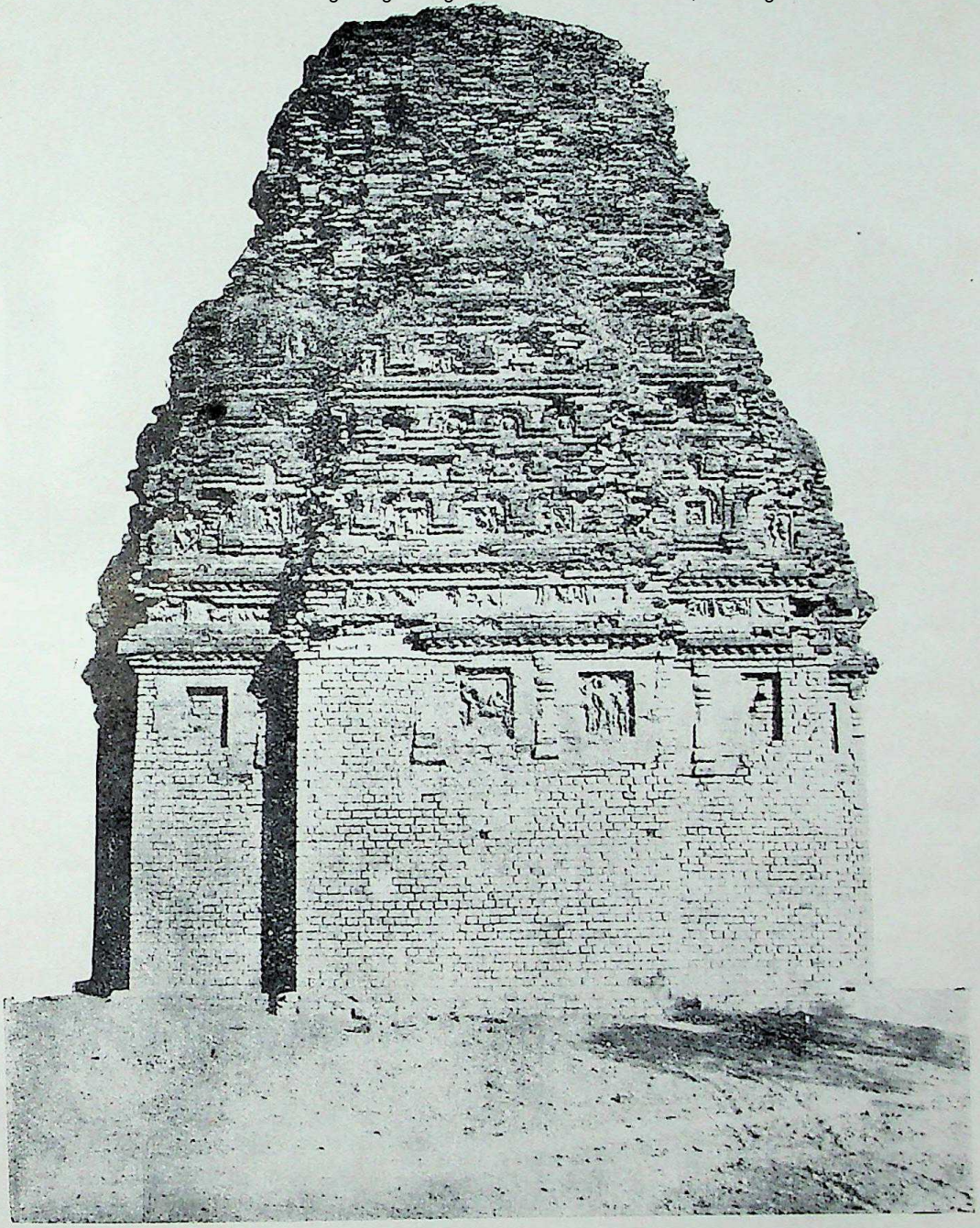

भीतरगांव (जि०कानपुर) में ईंट का बना हुआ मंदिर
समय—ई० छठी शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

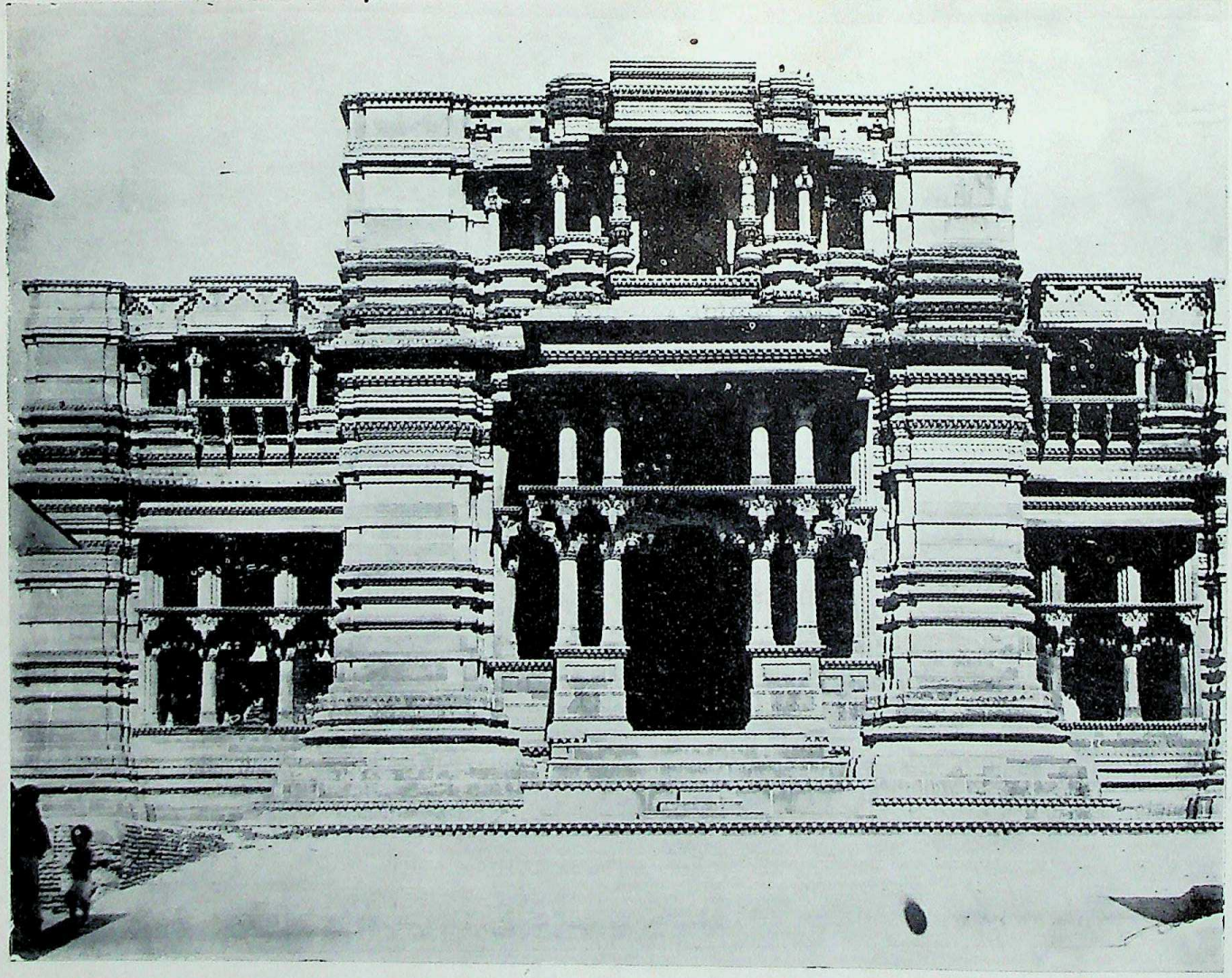

गोविन्द देव मन्दिर, वृन्दावन

उत्तर भारत में मुगल कालीन स्थापत्य का यह उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण अकबर के समय में आमेर के राजा मानसिंह द्वारा किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

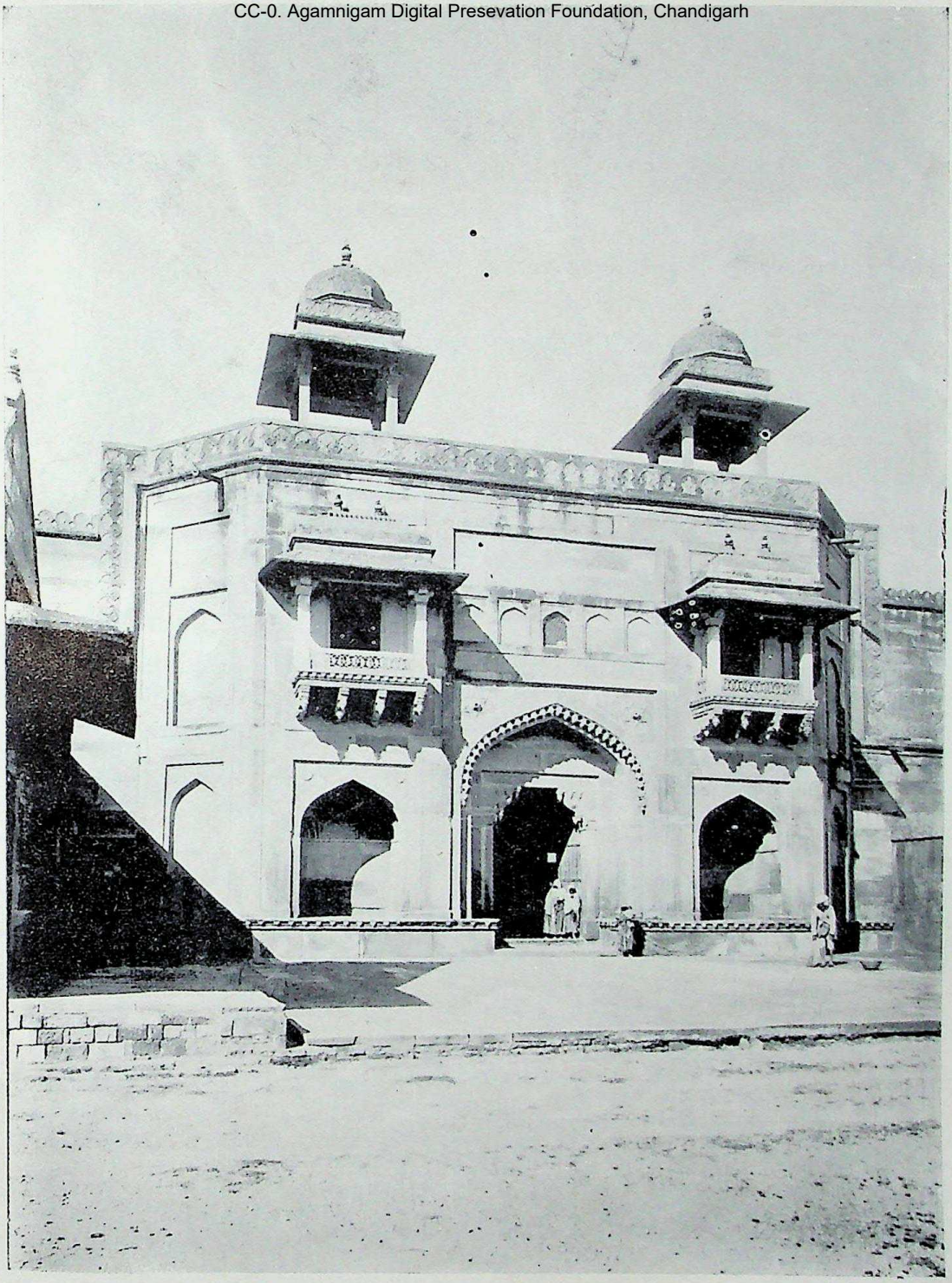

जोधाबाई का महल–फतहपुर सीकरी; ई० सोलहवीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

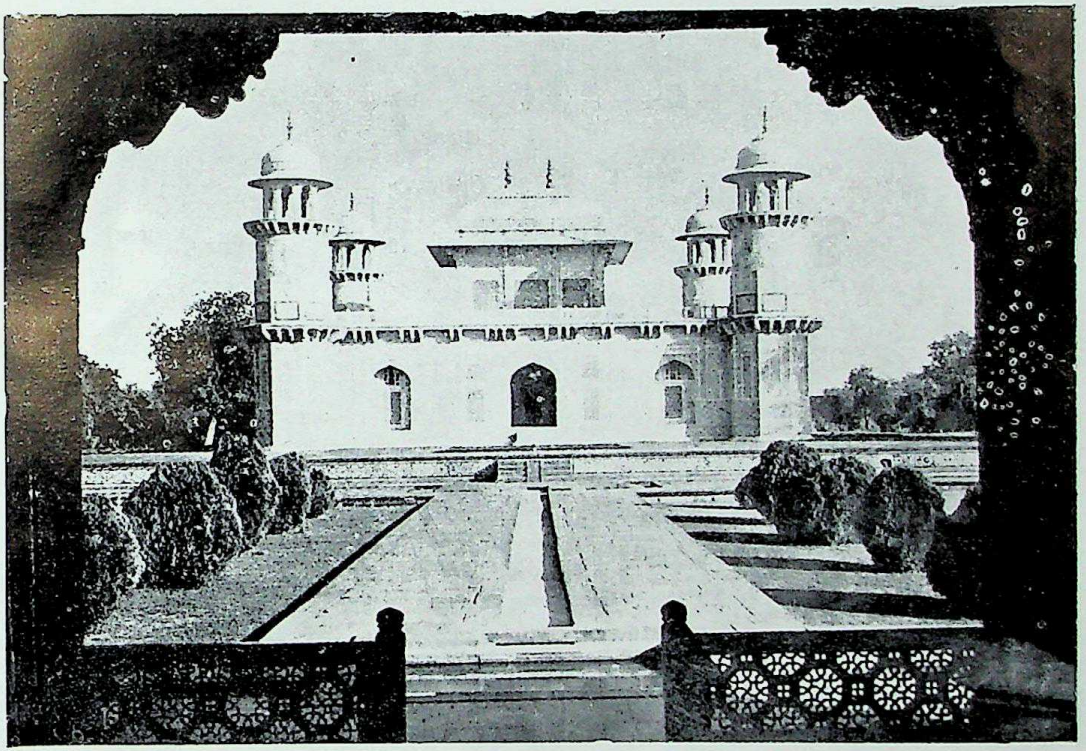

इतमादुद्दौला का मकबरा, आगरा, १६२६ ई०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

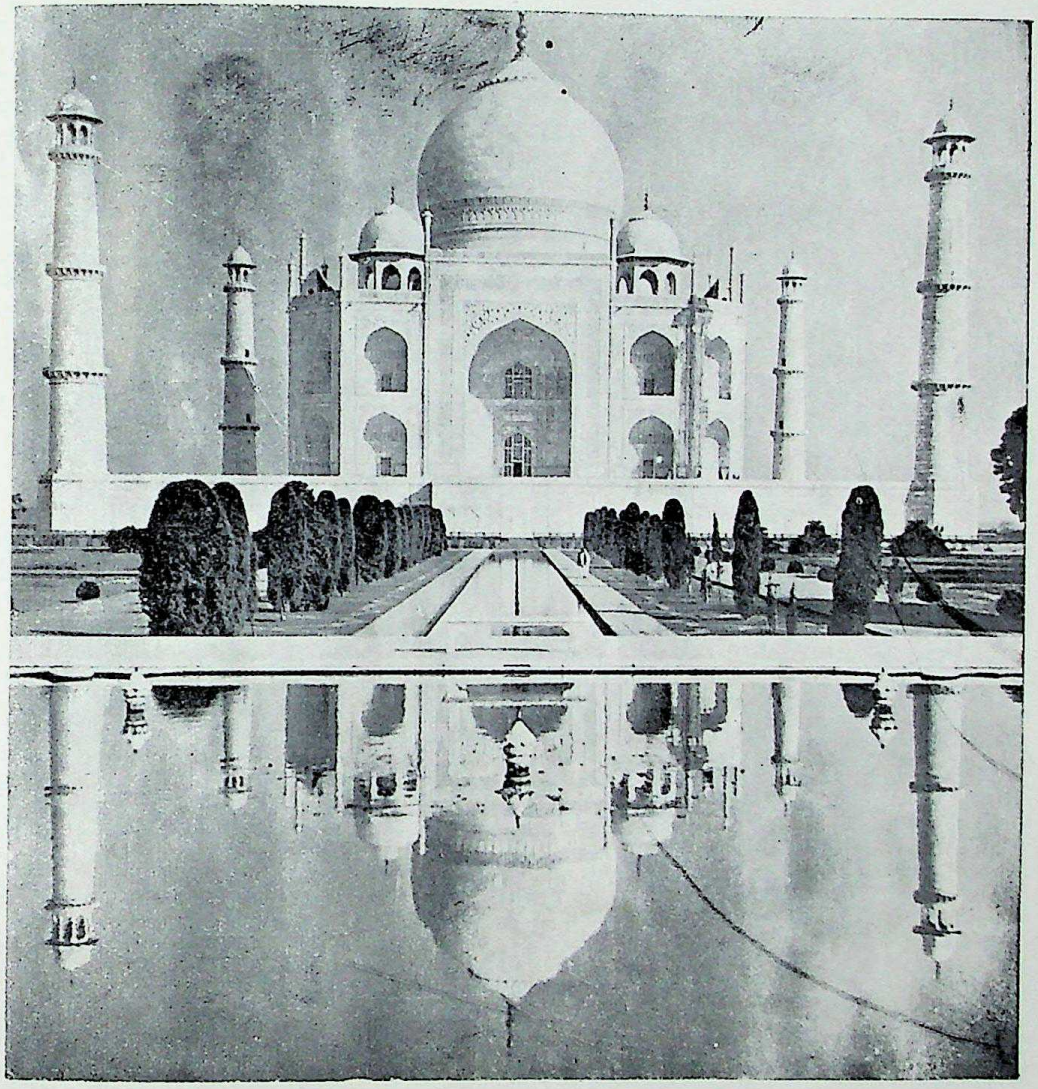

विश्व का एक महान् आश्चर्य--ताजमहल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

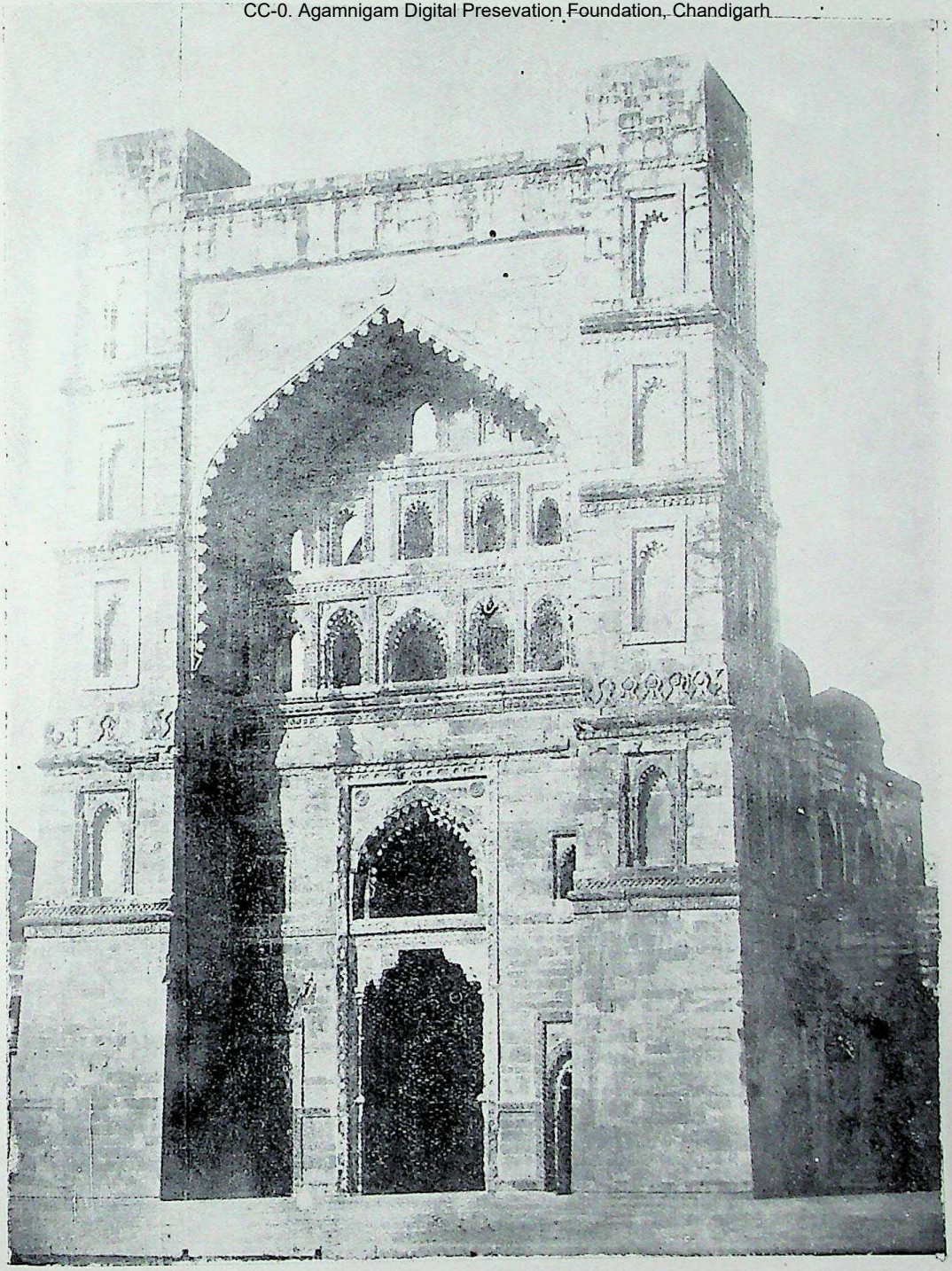

अटाला मस्जिद, जौनपुर
ई० चौदहवीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation

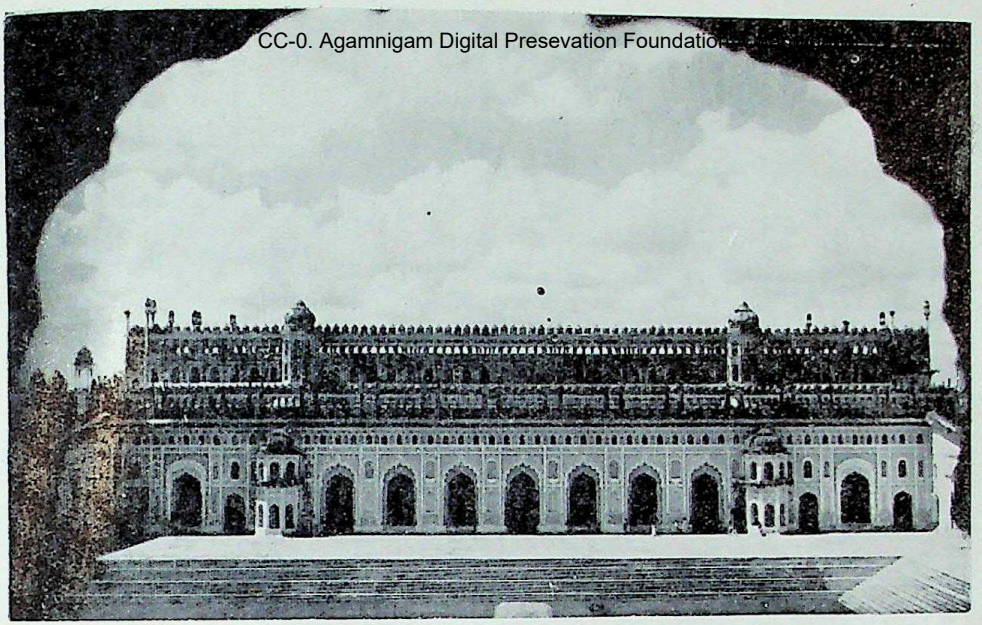

आसफुद्दौला का बड़ा इमामबाड़ा
लखनऊ

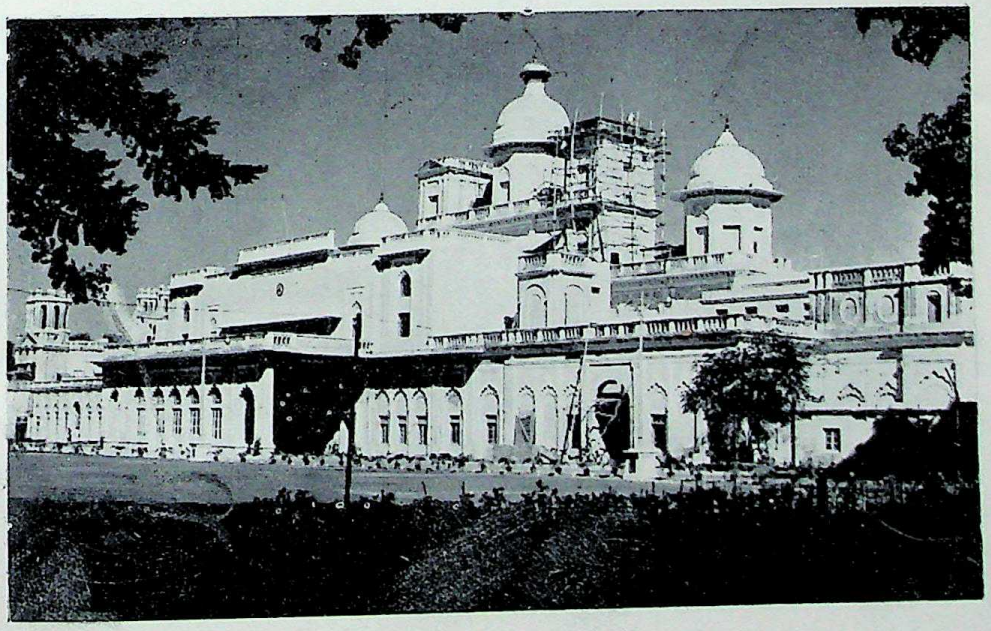

छतरमंजिल, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

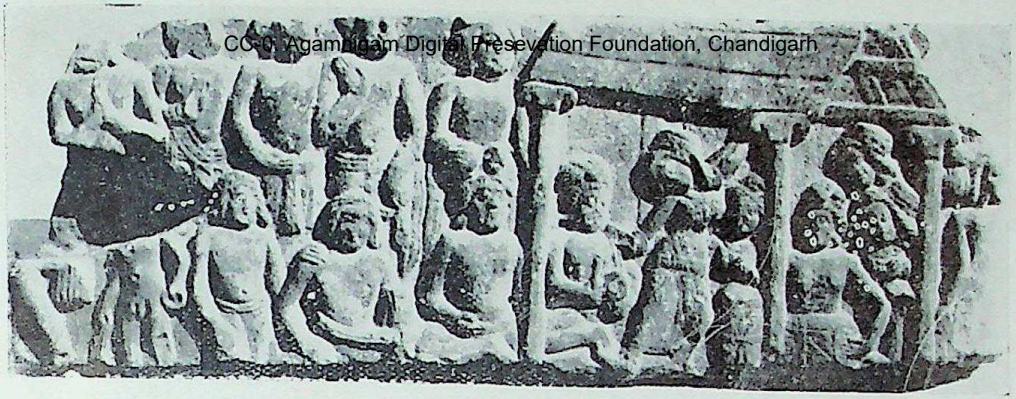

ग्राम-गोष्ठी; एक ओर खपरैल के नीचे नाच-गाना हो रहा है। मथुरा से प्राप्त; ई० पू० द्वितीय शती
(लखनऊ संग्रहालय)

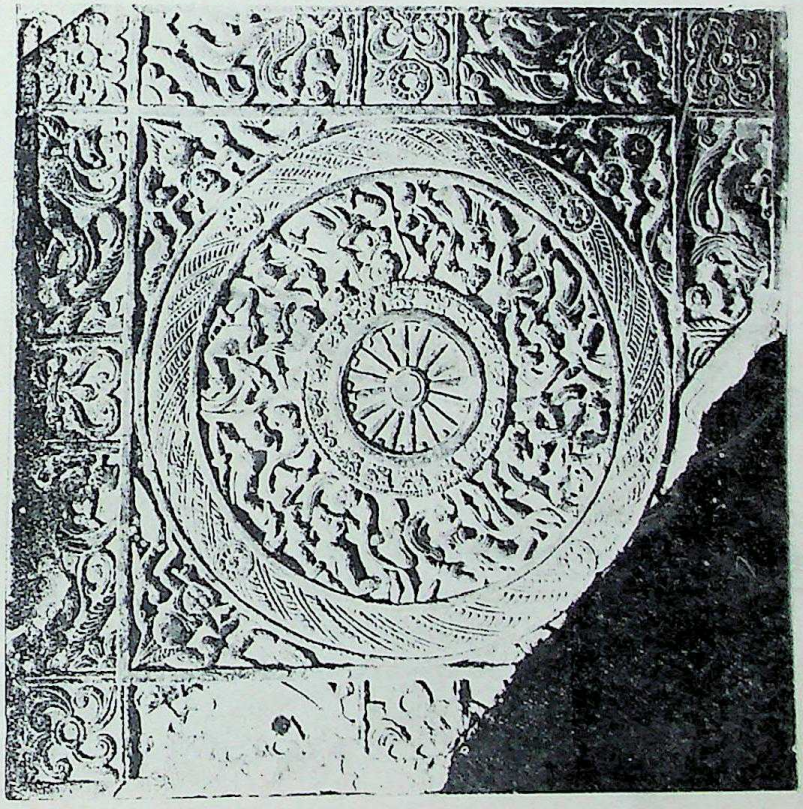

अष्ट दिक्पालिकाओं सहित जैन आयागपट्ट, जिस पर मांगलिक चिह्न तथा अन्य अलंकरण बने हैं।
मथुरा से; ई० पू० पहली शती (लखनऊ संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

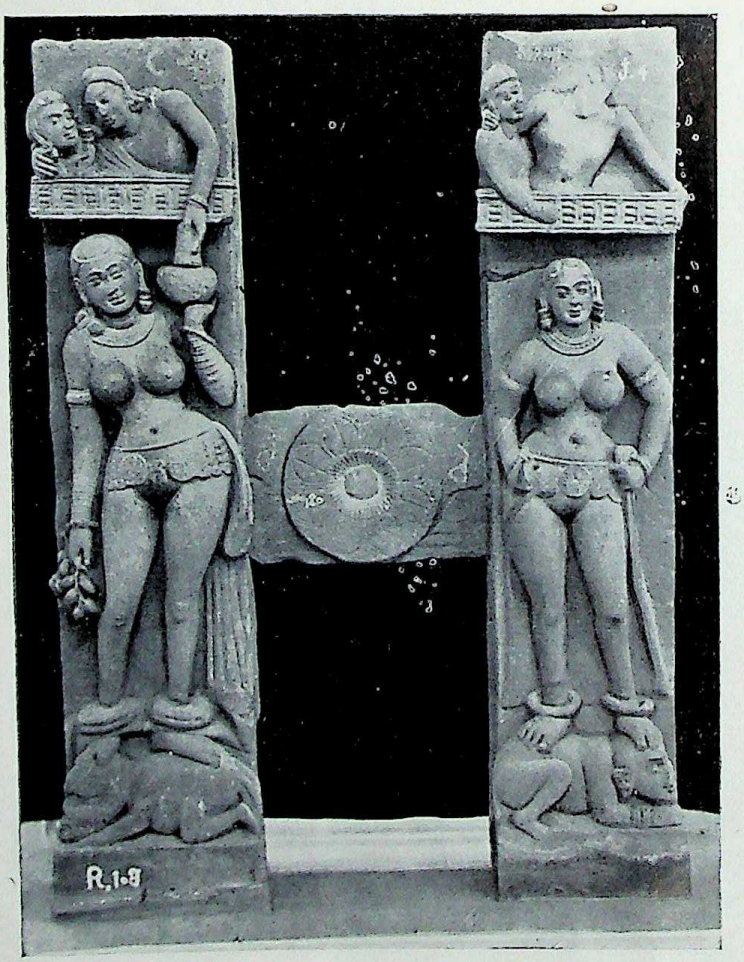

मथुरा के कलापूर्ण वेदिका स्तंभ

बाईं ओर मदिरा-पात्र तथा अंगूर का गुच्छा लिये रमणी; दाईं ओर वस्त्र पहनती हुई सुन्दरी, समय—ई० दूसरी शती

शुक के साथ क्रीडा में व्यस्त ललना

मथुरा, ई० दूसरी शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवताओं के सेनापति स्वामि कार्तिकेय की
अभिलिखित मूर्ति मथुरा। कुषाण काल

सौंदरानन्द का दृश्य—ऊपर सुन्दरी
की वेणी सँवारी जारही है; नीचे
वह दर्पण में मुख देख रही है,
पास में प्रसाधन-सामग्री लिये
उसका पति खड़ा है।
कुषाण कालीन वेदिका स्तंभ,
मथुरा संग्रहालय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Panjab Digital Library Collection. Digitized by eGangotri Heritage Preservation Foundation, Chandigarh

तीन कलापूर्ण सिर

पहला सिर ईरानी और दूसरा शक राजकुमार का है; तीसरा पुष्प-मालाओं से ग्रथित केशपाश वाली सुन्दरी का है। (मथुरा संग्रहालय)

पशु-पक्षियों का चिकित्सालय

डाक्टर महोदय (बंदर) एक तुन्दिल व्यक्ति की दुखती हुई आँख का निरीक्षण कर रहे हैं; दाईं ओर वे एक यंत्र द्वारा उल्लू की आँख का आपरेशन कर रहे हैं। कुषाणकाल, मथुरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कमलवन के बीच खड़ी हुई लक्ष्मी, जिसका अभिषेक दो हाथियों द्वारा किया जा रहा है। मिट्टी की मूर्ति; ई० पू० दूसरी शती

स्त्री का अलंकृत सिर
मिट्टी की मूर्ति, कुषाण काल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

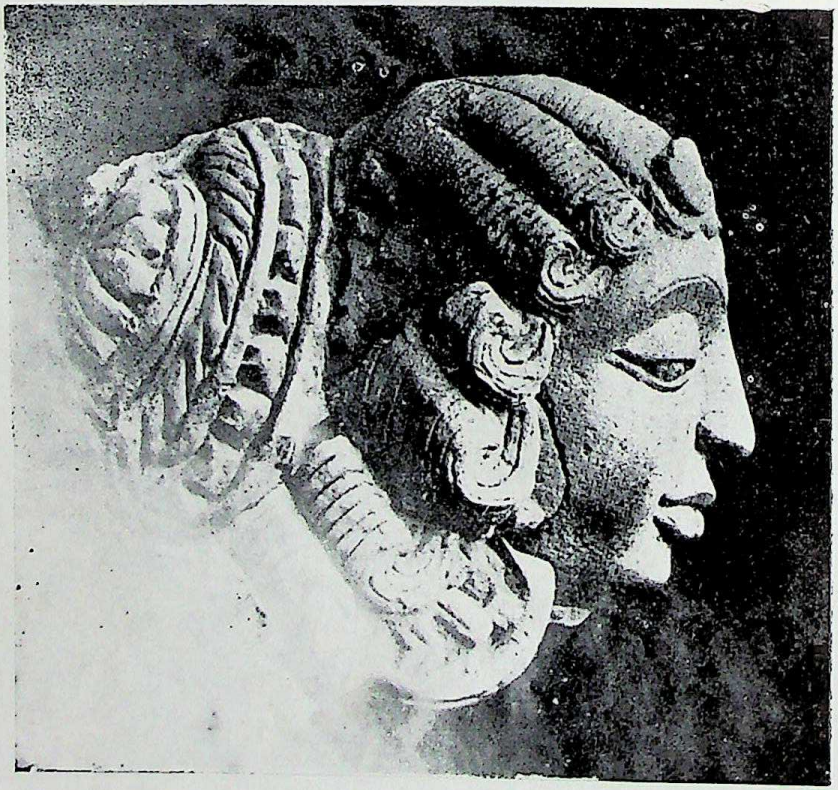

अलंकृत केशविन्यास युक्त पार्वती का सुन्दर सिर
मिट्टी की मूर्ति; अहिच्छत्रा (जि० बरेली) से
ई० पांचवीं शती
(राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

अहिच्छत्रा के फरगुल विहार में स्थापित
यक्ष-मूर्ति; ई० दूसरी शती
(लखनऊ संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

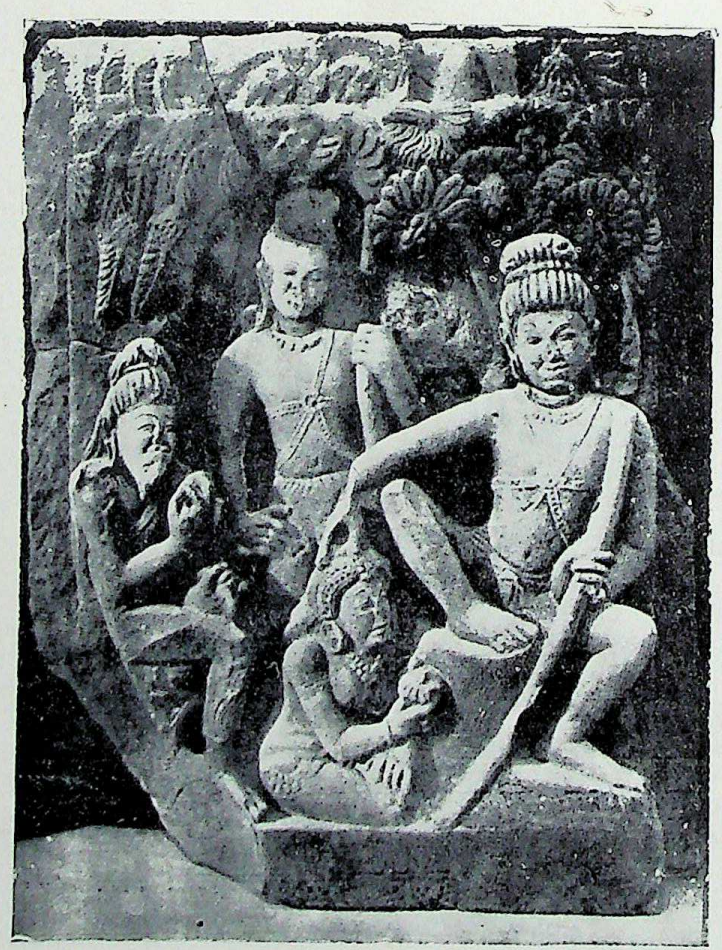

अहल्या उद्धार

पुष्पित वृक्षों के नीचे ऋषि के साथ धनुर्धारी राम-लक्ष्मण हैं; श्रीराम के पैर के नीचे शिलीभूत अहल्या अब स्त्री रूप में विद्यमान है। देवगढ़ (जि० झाँसी) से; गुप्तकाल

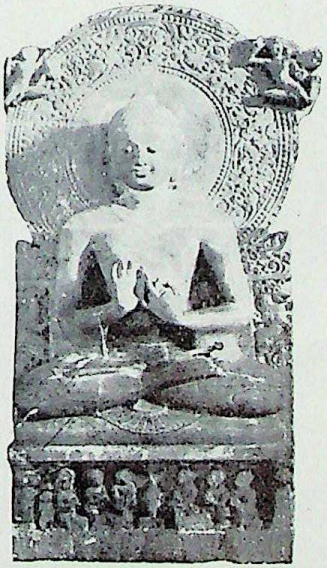

धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में भगवान् बुद्ध
गुप्तकाल (सारनाथ संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिव--पार्वती का विवाह

वर-वधू के भावों की अभिव्यक्ति तथा विभिन्न अंगों का विन्यास अत्यन्त सुन्दर है

कन्नौज से; ई० आठवीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्मुखी शिव-मूर्ति

सामने स्मित भाव में देवी का अलंकृत मस्तक है; अगल-बगल जटाजूट-संयुक्त शिव के सिर हैं; ई० दसवीं शती

बैजनाथ (जि० अलमोड़ा) की प्रधान पार्वती-मूर्ति ई० नवीं शती

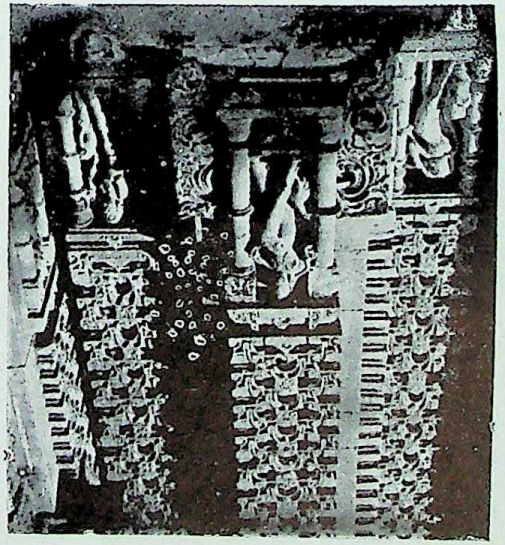

बरवासागर के शिव-मन्दिर का बहिर्भाग, जिस पर अप्सराओं के चित्रण तथा विविध बेल-बूटे उत्कीर्ण हैं; नवीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

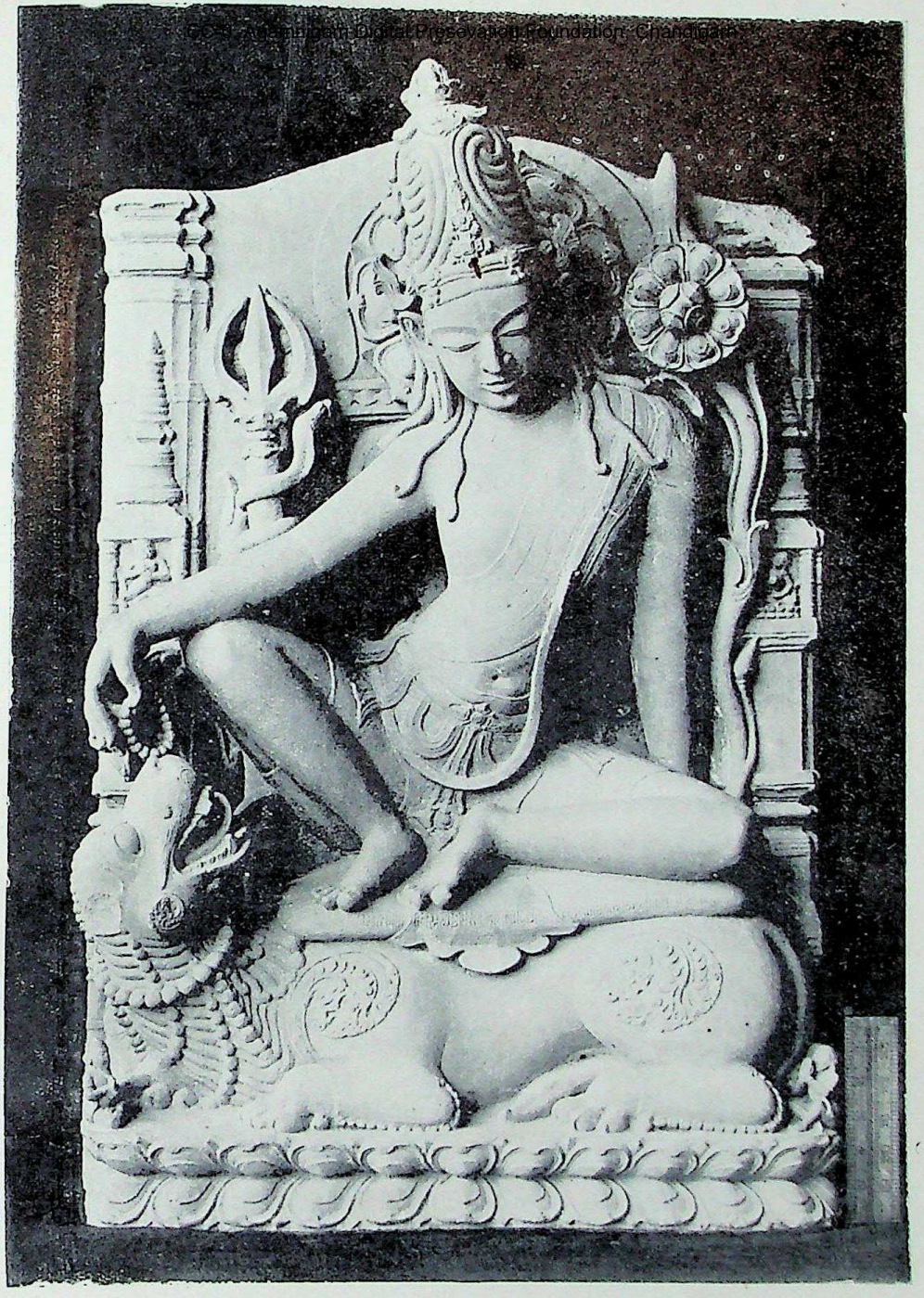

सिंहनाद अवलोकितेश्वर की अत्यंत भावपूर्ण मूर्ति
महोबा से; ई० ग्यारहवीं शती (लखनऊ संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बौद्ध देवी तारा

कांसे की मूर्ति; ई० सत्रहवीं शती (मथुरा संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

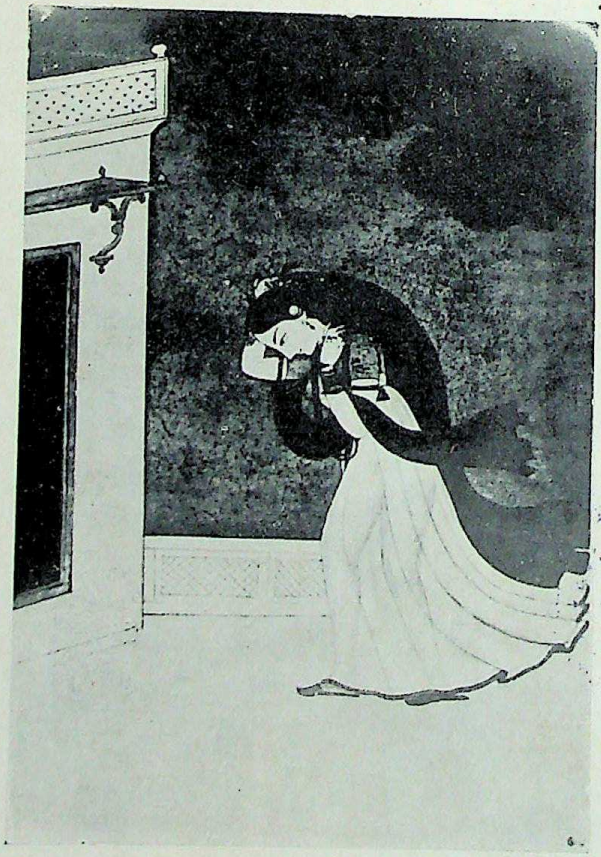

आया पानी !

काँगड़ा शैली का सुन्दर चित्र; १९वीं शती
(भारत कला भवन, काशी)

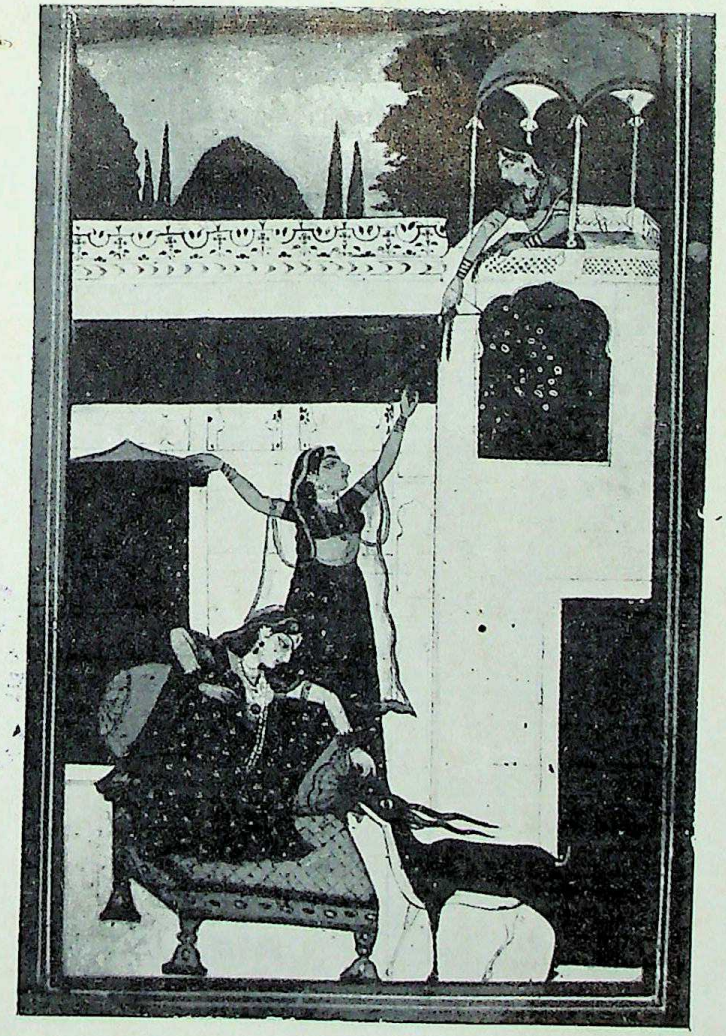

अंतःपुरिकाओं की क्रीडाएँ

ऊपर से एक महिला दूसरी को पत्रावली दे रही है; नीचे बैठी हुई स्त्री मृग-छौने को दुलरा रही है। ई० १८वीं शती (प्रयाग संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायण के तीन दृश्य

पहाड़ी शैली का चित्र; १९ वीं शती का प्रारम्भ

(प्रयाग संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मथुरा प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा ।